विश्वास की कमी से नहीं हो पाया विकास

हमारी विकास की अपनी कल्पना है, लेकिन उसका कहीं प्रयोग नहीं हुआ। क्योंकि उस पर प्रयोग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। इसका एक कारण विश्वास की कमी का रहा है, विश्वास था तो साहस नहीं था।

– डा. मोहनराव भागवतजी

भारतीय विकास की अवधारणा एकदम अलग है। विकास सब चाहते हैं। विकास ज़्या होना चाहिए ये तय करना पड़ता है। यहां विकास तब माना गया है, जब सबका विकास एक साथ हो। केवल धन बढ़ना विकास नहीं है, बल्कि नैतिकता का बढ़ना विकास माना जाता है। हमारे यहां धन का महत्व दान से है और शज़्ति का महत्व सज्जनों की रक्षा से है। हमारी विकास की अपनी कल्पना है, लेकिन उसका कहीं प्रयोग नहीं हुआ। ज़्योंकि उस पर प्रयोग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। इसका एक कारण विश्वास की कमी का रहा है, विश्वास था तो साहस नहीं था। इसलिए विकास का ऐसा ढर्रा अपनाया गया जिसमें सारा कुछ सरकार नामक एजेंसी पर डाल दिया गया। सरकार का